IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 5, May 2020
Impact Factor: 4.819

श्रीमद्भगवद्गीता में भक्ति का स्वरूप

डॉ. कीर्ति शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर- संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, जनपद- चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

शोध सारांश

श्रीमद्भगवद्गीता में भक्ति की महिमा का गान करते हुए कहा गया है कि भक्ति व्यक्ति के लिए इसलिए अनिवार्य है क्योंकि यह भक्ति केवल स्वर्ग, संपत्ति, सन्तति एवं कामनाओं की पूर्ति ही नहीं कराती, अपितु यह भी सिखाती है कि प्रेम का प्रेम से बढ़कर पुरस्कार प्रेम ही है और स्वयं ईश्वर प्रेम स्वरूप है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि कर्म को कर्म के लिए करना चाहिए तथा निष्काम कर्म करना चाहिए जिसमें किसी प्रकार की कोई अभिलाषा न हो। इस प्रकार ज्ञान, कर्म, एवं भक्ति में समन्वय स्थापित करके ही कर्म की ओर प्रवृत्त होना चाहिए।

कुंजीपटल— त्रय साधना मार्ग, अव्यक्तोपासना, निदिध्यासन, निष्काम कर्म, शरणागति, लोकव्यवहार, अपरिग्रहभाव, लोकसंग्रह, पराभक्ति, इन्द्रियनिग्रह।